B.A. History Hon's, Part: I
Paper: II, Unit: - II, Date: Lecture No.: 26
28-10-2020

Session: पुर्तगाल का प्रारम्भिक औपनिवेशिक साम्राज्य

16 वीं शताब्दी में यूरोप में दो महान ऐतिहासिक घटनाएँ घटित हुई - वाणिज्यवाद का उत्कर्ष और राष्ट्रीय राज्यों का निर्माण। उल्लेखनीय है कि वाणिज्यवाद को सामन्तवाद के पतन के दौर में यूरोपीय नगरों ने विस्तृत किया था, जिसने यूरोपवासियों को दुनियाँ के कई अनजान हिस्सों से परिचित कराया फिर राष्ट्रीय राज्यों के उदय के बाद उनके महत्वाकांक्षी राजाओं में व्यापार वाणिज्य के विस्तार, धर्म प्रचार और उपनिवेश कायम करने की होड़ लग गई। इसके लिए यह जरूरी था कि उनके लिए अनजान दुनियाँ के नए-नए देशों प्रदेशों एवं भू-भागों का पता लगाकर इन तीन कार्यों को अंजाम दिया जाय, ताकि अधिक से अधिक आर्थिक और साम्राज्यिक औपनिवेशिक लाभ के साथ-साथ धार्मिक यश की प्राप्ति द्वारा अपने देश के अन्दर अपनी सत्ता को मजबूती प्रदान की जा सके। परिणामस्वरूप यूरोप में भौगोलिक खोजों का एक आन्दोलन ही चल पड़ा, जिसे धर्मयुद्ध और प्रारम्भिक वाणिज्यवाद से प्रेरणा मिली थी। कहा जाता है कि व्यापार का अनुगमन बड़बिल ने किया और फिर बड़बिल की रक्षा के लिए तलवार आगे बढ़ा और अफ्रिका तथा एशिया महादेश का अधिकांश भाग यूरोपीय औपनिवेशिक साम्राज्यवाद का शिकार हो गया। इस कार्य में प्रारम्भ में यूरोप के सुदूर दक्षिण-पश्चिम किनारे पर स्थित पुर्तगाल को प्रारम्भिक काल में सर्वाधिक लाभ हुआ और देखते ही देखते अफ्रीका तथा एशिया महादेश में उसका एक विशाल औपनिवेशिक साम्राज्य स्थापित हो गया।

पन्द्रहवीं सदी के उत्तरार्द्ध पूर्वार्द्ध में पुर्तगाल के शासक हेनरी को भौगोलिक खोजों में गहरी दिलचस्पी थी। उसने 'नाविक हेनरी' कहा जाता था। वह अपने देश के लिए अधिक-अधिक उपनिवेशों की अभि प्राप्ति द्वारा साम्राज्य विस्तार कर आर्थिक एवं सामरिक लाभ तथा उपनिवेशित क्षेत्र में ईसाई धर्म का प्रचार करना चाहता था। अतः यह जरूरी था कि भौगोलिक खोज को प्रोत्साहित करके नए भू-भागों की खोज की जाय। पुर्तगाल के धर्म प्रचारक और व्यापारी इसे अन्तिम परिणाम तक पहुँचने के लिए तैयार बैठे थे। हेनरी ने भौगोलिक खोज के लिए संगठित प्रयास किया। नाविकों को प्रशिक्षित करने के लिए उसने एक विद्यालय की स्थापना की। उसके प्रशिक्षित नाविकों ने मदेरा और एजोर द्वीपों का पता लगाया और व्यापारियों तथा धर्म प्रचारकों ने उनका उपनिवेशीकरण किया। अफ्रीका में आगे बढ़ते हुए इन द्वीपों के अलावा केपवर्डे का भी उपनिवेशीकरण किया गया। हेनरी के जीवनकाल में उसके नाविक कंप बोजाडोर तक पहुँच गए। उपनिवेशों से न केवल सोना, चाँदी बल्कि काले दास भी लाए जाने लगे। कालान्तर में दास-व्यापार भी काफी लाभदायक सिद्ध हुआ। जाहिर है कि हेनरी के जीवन काल में पुर्तगाल को औपनिवेशिक साम्राज्य का अत्यन्त ही मीठा स्वाद मिल गया। अब वह अफ्रीका तक सीमित रहनेवाला नहीं था।

1460 में हेनरी की मृत्यु के बाद उसके उत्तराधिकारी राजा जॉन द्वितीय ने अफ्रीकी व्यापार को इस शर्त पर निजी कम्पनी को सौंप दिया कि वह प्रतिवर्ष 100 मील तटीय प्रदेश का पता लगाकर उसका मार्ग एवं मानचित्र सरकार को सौंपेगी। 1487 में एक पुर्तगाली नाविक बार्थोलोम्यू दियाज अफ्रीका के सुदूरतम पश्चिमी छोड़ पर पहुँचा, जिसका नाम उत्तमाशा अन्तरीप रखा गया। 1498 में इस आशा अन्तरीप के रास्ते वास्कोडिगामा भारत के कोरोमंडल तट पर कालिकट पहुँचा। इसके साथ ही एशिया और यूरोप के सम्बन्धों में एक नए युग का श्रीगणेश हुआ। वास्कोडिगामा ने यहाँ औपनिवेशन के पुर्तगाली उपनिवेश की नींव डाली। इसके कई परिणाम हुए। सर्वोपरि इससे तुर्की और अरबों के सदियों पुराने व्यापार को बन्द कर दिया। यह व्यापार भारतीय जहाज पर होता था। अतः भारतीय जहाज उद्योग को भी भारी धक्का लगा।

इसके साथ ही मुनि पुर्तगालियों ने अन्य यूरोपीय देशों के व्यापारियों के भारत आगमन का पथ प्रदर्शन किया। भारत आगमन की स्मृति में वास्को डिगामा ने संगमरमर का एक ऊँचा स्मारक स्थापित किया। 1499 में वह कालीकट से जब लिस्बन लौटा तो अपने साथ इतना धन ले गया, जो उसके भारत अभियान में हुए व्यय से सोलह गुणा अधिक था।

कालीकट को केन्द्र बनाकर पुर्तगालियों ने गोवा, श्रीलंका, सुमात्रा, जावा और मसाला द्वीपों में अपने प्रभाव क्षेत्र का विस्तार किया और व्यापारिक कोठियाँ स्थापित की। पुर्तगाली व्यापारियों का अनुगमन धर्म प्रचारकों ने किया और बड़े पैमाने पर धर्मान्तरण कराया गया। पुर्तगाल ने अपने एशियाई उपनिवेशों को संगठित करने के लिए 1505 ई० में अल्फांसो अल्बुकर्क को गवर्नर बनाकर भेजा। गोवा को राजधानी बनाया गया। अल्बुकर्क ने गोवा को आधार बनाकर भारत के कई तटवर्ती नगरों पर कब्जा कर लिया। भारत की राजनीतिक स्थिति उस समय ठीक नहीं थी, जिसका लाभ उठाकर पुर्तगाल ने यूरोप का एशिया के साथ सामुद्रिक व्यापार मार्ग पर नियंत्रण कायम कर लिया। अब भारत और दक्षिण-पूर्वी एशियाई देशों से आगे बढ़ते हुए पुर्तगाली चीन और जापान में भी जा धमके और अपनी बस्तियाँ कायम की। पुर्तगाल का राजा इमैनुएल अल्बुकर्क की बढ़ती ताकत से इतना घबरा गया कि उसे वापस बुला लिया। लेकिन पुर्तगाल का एशियाई अभियान चलता रहा और ब्रिटेन तथा फ्रान्स के इस क्षेत्र में पहुँचने से पहले तक पुर्तगाल सर्वाधिक शक्तिशाली औपनिवेशिक साम्राज्यवादी शक्ति बना रहा और इसाई धर्म में धर्मान्तरण, सामुद्रिक व्यापार तथा राजनीतिक शक्ति के संवर्द्धन का उसका अभियान निर्विरोध जारी रहा।

1500 ई० में पुर्तगाल का पैड्रो कैब्रल चला तो भारत के लिए था, परन्तु भयंकर तूफान में भटक कर दक्षिण अमेरिका के सुदूर पूर्वी किनारे पर पहुँच गया। इसका नाम ब्राजील रखा गया जो बाद में पुर्तगाल का सबसे बड़ा उपनिवेश बन गया। इस प्रकार 16वीं शताब्दी में पुर्तगाल यूरोप का सर्वाधिक शक्तिशाली औपनिवेशिक साम्राज्य था।

पुर्तगाल को औपनिवेशिक साम्राज्य विस्तार का धार्मिक-आर्थिक और राजनीतिक लाभ ही नहीं हुआ, अपितु सांस्कृतिक लाभ भी हुआ। पूरब के ज्ञान सम्पदा के कारण पूर्वी देशों का ज्ञान एवं यहाँ की संस्कृति का पुर्तगाल पर यथेष्ट प्रभाव पड़ा। इसके परिणामस्वरूप पुर्तगाल में पुनर्जागरण की उसी प्रकार लहर पैदा हुई, जैसी प्राचीन यूनानी एवं रोमन ज्ञान के प्रभाव में इटली में पैदा हुई थी। परन्तु पुर्तगाल की यह हैसियत बहुत दिनों तक बनी नहीं रह सकी, स्पेन के राजा फिलिप द्वितीय की महत्वकांक्षा का शिकार बन पुर्तगाल स्पेनी साम्राज्य का हिस्सा बनकर रह गया।

☐ डा० शंकर जय किशन चौधरी
अतिथि शिक्षक, इतिहास विभाग
डी०बी० कालेज, जयनगर